समाजशास्त्र परिचय Notes Chapter 1 Class 11 Samajshastra Parichay समाजशास्त्र एवं समाज UP Board

पुस्तक - 1 समाजशास्त्र परिचय

अध्याय-1
समाजशास्त्र एंव समाज

स्मरणीय बिन्दु :

- **समाज :** समाज, सामाजिक संबंधों का जाल है।
- **समाज की प्रमुख विशेषताएँ :**
  (1) समाज अमूर्त है
  (2) समाज में समानता व भिन्नता
  (3) पारस्पारिक सहयोग एंव संघर्ष
  (4) आश्रित रहने का नियम
  (5) समाज परिवर्तनशील है
- **व्यक्ति और समाज में समबंध / मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है:**
  (1) मनुष्य के क्रियाकलाप समाज से संबंधित हैं और समाज पर ही उसका अस्तित्व और विकास निर्भर करता है।
  (2) मानव शरीर को सामाजिक विशेषताओं या गुणों से व्यक्तित्व प्रदान करना समाज का ही काम है।
  (3) इस दृष्टि से व्यक्ति समाज पर अत्याधिक निर्भर है।
  (4) व्यक्तियों के बिना सामाजिक संबंधोंकी व्यवस्था नहीं पनप सकती और न ही सामाजिक संबंधों की व्यवस्था के बिना समाज का अस्तित्व संभव है।
- **मानव समाज और पशु समाज में अन्तर**

मानव समाज	पशु समाज
(1) बोलने, सोचने समझने की शक्ति होती है।	बोलने, सोचने, समझने की शक्ति नहीं होती है।
(2) अपनी एक संस्कृति होती है।	संस्कृति नहीं होती है।
(3) स्वयं को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है।	स्वयं के व्यक्त करने के लिए भाषा नहीं होती है।
(4) भविष्य की चिन्ता करता है उसके लिए योजनाएं बनाता है।	वर्तमान में जीता है।

- **समाजों में बहुलताएँ एंव असमानताएँ**
  (1) एक समाज दूसरे समाज से भिन्न होता है।
  (2) हम एक से अधिक समाज के सदस्य बनते जा रहे हैं।

evidyarthi
https://www.evidyarthi.in

(3) दूसरे समाजों से अंतः क्रिया करते हैं, उनकी संस्कृति को ग्रहण करते हैं।

(4) इस प्रकार आज हमारी संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति तथा हमारा समाज एक बहुलवादी समाज (एक से ज्यादा समाज) में परिवर्तित होता जा रहा है।

(5) हमारे समाज में असमानता समाजों के बीच केन्द्रीय बिंदु है।

उदाहरण : अमीर व गरीब

समाजशास्त्र : सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित व क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करने वाला विज्ञान ही समाजशास्त्र है।

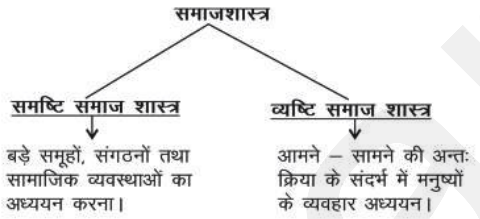

- **समाजशास्त्र की उत्पत्ति :**

(1) समाजशास्त्र का जन्म 19वीं शताब्दी में हुआ।

(2) समूह के क्रिया – कलापों में भाग लेने के लिए आवश्यक है कि समस्याओं को सुलझाया जाए। इन्हीं प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही समाजशास्त्र की उत्पत्ति हुई है।

(3) 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांस के विचारक अगस्त कॉम्ट ने समाजशास्त्र का नाम सामाजिक भौतिकी रखा और 1838 में बदलकर समाजशास्त्र रखा। इस कारण से कॉम्ट को "समाजशास्त्र का जनक" कहा जाता है।

(4) समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में विकसित करने में दुर्खीम, स्पेंसर तथा मैक्स वेबर आदि विद्वानों के विचारों का काफी रहा है।

(5) भारत में समाजशास्त्र के उद्‌भव का विकास का इतिहास प्राचीन है।

(6) भारत में समाजशास्त्र विभाग 1919 में मुम्बई विश्वविद्यालय में शुरू हुआ तथा औपचारिक अध्ययन शुरू हुआ।

- **भारत में समाजशास्त्र के अध्ययन के अध्ययन की आवश्यकता :**

(1) भारत में व्याप्त क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद आदि समस्याओं को व्यवस्थित ढंग से सुलझाने के लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।

(2) इसी कारण, भारत में विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु समाजशास्त्र का अध्ययन

https://www.evidyarthi.in

अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।

(3) दूसरे समाजों के साथ तुलनात्मक अध्ययन होता है

(4) सामाजिक गतिशीलता के बारे में पता चलता है

- **समाजशास्त्र की प्रकृति की मुख्य विशेषताएँ :**
  - (1) समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, न कि प्राकृतिक विज्ञान।
  - (2) समाजशास्त्र एक निरपेक्ष विज्ञान है, न कि आदर्शात्मक विज्ञान।
  - (3) समाजशास्त्र अपेक्षाकृत एक अमूर्त विज्ञान है, न कि मूर्त विज्ञान।
  - (4) समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है, न कि विशेष विज्ञान।

- **बौद्धिक विचार जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है :**

  प्राकृतिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धांतो और प्राचीन यात्रियों द्वारा पूर्व आधुनिक सभ्यताओं की खोज से प्रभावित होकर उपनिवेशी प्रशासकों, समाजशास्त्रियों एंव सामाजिक मानवविज्ञानियों ने समाजों के बारें में इस दृष्टिकोण से विचार किया कि उनका विभिन्न प्रकारों में वर्गीकरण किया जाए ताकि सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को पहचाना जा सके।

- **सरल समाज एंव जटिल समाज :**

1. भारत स्वयं परंपरा और आधुनिकता का, गाँव और शहर का, जाति और जनजाति का, वर्ग एंव समुदाय का एक जटिल मिश्रण है।
2. 19 वी शताब्दी में समाजों का वर्गीकरण किया गया–
   - (1) आधुनिक काल से पहले के समाजों के प्रकार जैसे – शिकारी टोलियाँ एंव संग्रहकर्ता, चरवाहे एंव कृषक, कृषक एंव गैर औद्योगिक सभ्यताएँ (सरल समाज)
   - (2) आधुनिक समाजों के प्रकार, जैसे–औद्योगिक समाज (जटिल समाज)
   - (3) डार्विन के जीव विकास के विचारों का आरंभिक समाजशास्त्रीय विचारों पर दृढ़ प्रभाव था।
   - (4) ज्ञानोदय, एक यूरोपीय बौद्धिक आंदोलन जो सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षो एंव अट्ठारहवीं शताब्दी में चला, कारण और व्यक्तिवाद पर बल देता है।
   - (5) सरल समाज में श्रम विभाजन नही होता जबकि जटिल समाज देखने को मिलता है।

- **भौतिक मुद्दे जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है।**
- **औद्योगिक क्रांति से आए बदलाव एंव पूँजीवाद :**
  1. औद्योगिक क्रांति एक नए गतिशील आर्थिक, क्रियाकलाप–पूँजीवाद पर आधारित थी। पूँजीवाद–आर्थिक उद्यम की एक व्यवस्था है जोकि बाजार विनिमय पर आधारित है। यह व्यवस्था उत्पादन के साधनों और संपत्तियों के

https://www.evidyarthi.in

निजी स्वामित्व पर आधारित है। औद्योगिक उत्पादन की उन्नति के पीछे यही पूँजीवादी व्यवस्था एक प्रमुख शक्ति थी।

2. उद्यमी निश्चित और व्यवस्थित मुनाफे की आशा से प्रेरित थे।

3. बाजारों ने उत्पादनकारी जीवन में प्रमुख साधन की भूमिका अदा की। और माल, सेवाएँ एंव श्रम वस्तुएँ बन गई जिनका निर्धारण तार्किक गणनाओं के द्वारा होता था।

4. इंगलैड औद्योगिक क्रांति का केंद्र था। औद्योगिकरण द्वारा आया परिवर्तन असरकारी था।

5. औद्योगिकीकरण से पहले, अंग्रेजों का मुख्य पेशा खेती करना एंव कपडा बनाना था। अधिकांश लोग गाँवों में रहते थे जोकि कृषक, भू–स्वामी, लोहार एंव चमड़ा श्रमिक, जुलाहे, कुम्हार, चरवाह थे। समाज छोटा था। यह स्तरीकृत था। लोगों की स्थिति उंनका वर्ग परिभाषित था।

6. औद्योगिकरण के साथ–साथ शहरी केंद्रों का विकास एंव विस्तार हुआ। इसकी निशानी थी, फैक्ट्रियों का धुआँ और कालिख, नई औद्योगिक श्रमिक वर्ग की भीड़भाड़ वाली बस्तियाँ, गंदगी और सफाई का नितांत अभाव।

7. अंग्रेजी कारखानों के मशीनों द्वारा तैयार माल के आगमन से भारी तादाद में भारतीय दस्तकार बरबाद हो गए क्योंकि अत्याधिक विकसित कारखानों में उनकी खपत नहीं हो सकती थी। इन बरबाद दस्तकारों ने मुख्यतः जीवन निर्वाह के लिए खेती को अपना लिया।

- **समाजशास्त्र की अन्य सामाजिक विज्ञानों के मध्य स्थिति एक दृष्टि में :**

1. सभी सामाजिक विज्ञान समाजशास्त्र से किसी रूप से संबंधित है और दूसरी और भिन्न भी है।

2. इनके आपसी सहयोग के द्वारा ही विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन सुचारू रूप से संभव है।

3. सभी सामाजिक विज्ञानों का क्षेत्र अलग–अलग है, और इन सभी का केंद्र बिंदु सामाजिक प्राणी मानव है।

4. समाजशास्त्र एक सहयोगी व्यवस्था का निर्माण करता है और सभी विज्ञानों को एक सामान्य पटल पर ले आता है।

5. इस प्रकार सामाजिक जीवन को जटिलताओं का अध्ययन व विश्लेषण सरलता से संभव है।

- **समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में संबंध :**

  - मनोविज्ञान मानव मस्तिष्क के अध्ययन से संबध्ति है, जबकि समाजशास्त्र मानव व्यवहार सीखने से संबध्ति हैं।

https://www.evidyarthi.in

- मनोविज्ञान व्यक्तियों या छोटे समूहों से संबध्ति है, समाजशास्त्र एक बड़े समूह या समाज क साथ सौदा करता है।
- मनोविज्ञान को एक प्रयोगात्मक प्रक्रिया के रूप में जाना जा सकता है, जबकि समाजशास्त्र एक अवलोकन प्रक्रिया के रूप मे किया जा सकता है।
- मनोविज्ञान मानव भावनाओं से संबधित है जबकि समाजशास्त्र लोगों के संपर्क से संबधित है।
- मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में, यह माना जाता है जबकि समाजशास्त्र लोगों के संपर्क से संबधित है।
- मनोवैज्ञानिक अध्ययनों मे यह माना जाता है कि व्यक्ति सभी गतिविध्यों के लिए अकेले जिम्मेदार है, जबकि समाजशास्त्र में यह एक व्यक्तिगत कार्य नहीं है। समाजशास्त्र मानता है कि एक व्यक्ति का कार्य उसके आस–पास या समूह से प्रभावित होता है।

- **समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में संबंध :**
    - समाजशास्त्र एक सामान्यीकृत विज्ञान है जबकि अर्थशास्त्र एक विशेष विज्ञान है।
    - समाजशास्त्र सभी प्रकार के रिश्तों का अध्ययन करता है जबकि अर्थशास्त्र केवल उन समबंध से संबधित है जो चरित्र में आर्थिक है।
    - समाजशास्त्र प्रकृति में सार और कम सटीक है। अर्थशास्त्र प्रकृति में ठोस है, और अधिक सटीक है
    - समाजशास्त्र में, सामाजिक चर मापने बहुत मुश्किल है। अर्थशास्त्र में, आर्थिक चर को स्टीक रूप से मापा सकता है और इसे मात्राब(किया जा सकता है।
- **समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान में संबंध :**
    - समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है राजनीतिक विज्ञान राज्य और सरकार का विज्ञान है।
    - समाजशास्त्र दोनों असंगठित समाजों का अध्ययन करते है जबकि राजनीतिक विज्ञान केवल राजनीतिक रूप से संगठित समाजों का अध्ययन करता है।
    - समाजशास्त्रों का व्यापक दायरा है जबकि राजनीतिक विज्ञान एक संकीर्ण क्षेत्र वाला विज्ञान है।
    - समाजशास्त्र मूल रूप से व्यक्ति का एक सामाजिक पशु के रूप में अध्ययन करता है जबकि राजनीतिक विज्ञान एक राजनीतिक पशु के रूप में मनुष्य का अध्ययन करता है।
    - समाजशास्त्र के लिए दृष्टिकोण सामाजिक है। यह वैज्ञानिक का दृष्टिकोण राजनीतिक है।
    - समाजशास्त्र एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है, इसलिए यह सामान्य तरीके के अलावा अपने स्वंय के तरीकों का पालन करता है। राजनीतिक विज्ञान एक विशेष सामाजिक विज्ञान है क्योकि यह मानव संबंधों पर केंद्रित है जो चरित्र में राजनीतिक हैं।

https://www.evidyarthi.in

- **समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध :**
  - समाजशास्त्र वर्तमान सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में रूचि रखता है जबकि इतिहास पिछले घटनाओं में रूचि रखता है।
  - समाजशास्त्र विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विज्ञान है। इतिहास एक वर्णनात्मक विज्ञान है।
  - समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान है। इतिहास एक विशिष्ट विज्ञान है।
  - समाजशास्त्र प्रश्नावली, सर्वेक्षण, साक्षात्कार विधियों आदि का उपयोग करता है। इतिहास अज्ञात के बारे में जानने के लिए कालक्रम, सिक्के इत्यादि का उपयोग करता है।
  - समाजशास्त्र द्वारा सामान्यीकृत तथ्यों के लिए परीक्षण और पुनः परीक्षण संभव है जबकि इतिहास में उल्लिखित घटनाओं के लिए परीक्षण और पुनः परीक्षण संभव नहीं है।
  - समाजशास्त्र का एक विस्तृत दायरा है। इतिहास का दायरा संकुचित है।
  - समाजशास्त्र एक युवा विज्ञान है। इतिहास सबसे पुराना विज्ञान है।

तुलनात्मक अध्ययन

समाजशास्त्र	अर्थशस्त्र	इतिहास	राजनितिशास्त्र	मनोविज्ञान
1. यह सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह वर्तमान तथा तत्काल बीते हुए समय का अध्ययन करता है।	1. यह केवल आर्थिक गतिविधियाँ का अध्ययन करता है।	1. बीते हुए समय का अध्ययन करता है।	1. यह केवल राज्य के राजनैतिक सिद्धांत तथा सरकारी प्रशासन का अध्ययन करता है।	1. यह व्यक्ति की मनोदशा का अध्ययन करता है।
2. इसका विषय क्षेत्र विशाल है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।
3. इसके अध्ययन के लिए तुलनात्मक तथा समाजमिती विधि प्रयोग की जाती है।	3. इसके अध्ययन के लिए आगमन तथा निगमन विधि प्रयोग की जाती है।	3. इसके अध्ययन के में विवरणात्मक विधि का प्रयोग होता है।	3. इसके अध्ययन में तुलनात्मक विधि का प्रयोग होता है।	3. इसके अध्ययन में गुणात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।
4. समाजशास्त्र घटनाओं के घटित होने के कारणों को खोजने की कोशिश करता है।	4. दृष्टिकोण आर्थिक है तथा इसका सम्बन्ध व्यक्ति की भौतिक खुशी से है।	4. पुरानी इतिहास घटनाओं को जानकारी देता है। तथा उसके विकास के अलग– अलग चरणों का अध्ययन करता है।	4. यह एक विशेष शास्त्र है। यह केवल व्यक्ति के जीवन के राजनीतिक हिस्से का अध्ययन करता है।	4. मनौवैज्ञानिक व्यक्तिगत आशाओं और भय का अध्ययन करते हैं।

https://www.evidyarthi.in

शब्दकोश

पूँजीवाद

- बाजार विनिमय के आधार पर आर्थिक उद्यम की एक प्रणाली।
- ''पूंजी'' किसी भी परिसंपत्ति को संदर्भित करती है, जिसमें पैसा, संपत्ति, मशीन और शामिल है, जिसका उपयोग बिक्री क लिए वस्तुओं का उत्पादन करने या लाभ प्राप्त करने की आशा के साथ बाजार में निवेश करने के लिए किया जा सकता है।
- यह संपत्ति के निजी स्वामित्व और उत्पादन के साधनों पर निर्भर है।

द्वंद्वात्मक

- सामाजिक बलों का विरोध करने या अस्तित्व की कार्रवाई, उदाहरण के लिए सामाजिक बाध और व्यक्तिगत इच्छा

आनुभाविक जांचः

- सामाजिक अध्ययन के किसी दिए गए क्षेत्र में एक वास्तविक जांच की गई।

तथ्यात्मक पूछताछः

- तथ्यात्मक या वर्णनात्मक पूछताछ। इसका उद्देश्य मूल्यों मूद्दों को समझने और हल करने के लिए आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करना है।

सामाजिक प्रतिबंधः

- समूह और समाज जिनके हम एक हिस्सा है जब वे हमारे व्यवहार पर एक अनुकूलित प्रभाव ड़ालते है।

मूल्यः

- मानव व्यक्ति या समूहों के विचार जो वांछनीय, उचित अच्छे या बूरे के बारे में है।

नस्ल / जातीयता

- नस्ल साझा संस्कृतिक प्रथाओं, दृष्टिकोणों और भेदों को संदर्भित करता है जो लोगों के दूसरे से अलग करते है।

अथवा

जातीयता एक साझा सांस्कृतिक विरासत है। विभिन्न जानीय समूहों को अलग करने वाली विशेषताएं वंश, इतिहास की भावना, भाषा, धर्म और पोशाक के रूप हैं।

उपनिवेशवादः

- यह किसी अन्य देश पूर्ण या आंशिक राजनैतिक नियन्त्रण प्राप्त करने, इसे बसने वालों के कब्जा करने और आर्थिक रूप से इसका शोषण करने ककी नीति या अभ्यास को संदर्भित करता है

कारखाना उत्पादनः

- एक कारखाना उत्पादन या विनिर्माण संयंत्र एक और औद्योगिक स्थल है, जिसमें आम तौर पर भवनों और मशीनरी या अधिक जटिल होते है, जिनमें कई इमारतों होते है, जहाँ श्रमिक सामान का निर्माण अधिक करते है या मशीनों को एक उत्पाद से दूसरे में संसाधित करते हैं।

https://www.evidyarthi.in

2 अंक वाले प्रश्न

1. समाज से आप क्या समझते हैं?
2. समाजशास्त्र का जनक किसे माना जाता है?
3. समाजशास्त्र का क्या अथ है?
4. भारतीय समाज की असमानताओं की चर्चा कीजिए?
5. पूँजीवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. अनुभाविक अन्वेषण से आप क्या समझते हैं?
7. नगरीकरण के दो प्रभाव बताइए।
8. समष्टि और व्यष्टि समाजशास्त्र में अंतर बताइए।
9. पूंजीवाद क्या है?
10. सामाजिक प्रतिबंध परिभाषित करें।
11. मूल्य क्या है?
12. अनुभवजन्य जांच क्या है?

4 अंक वाले प्रश्न

1. समाज की प्रमुख विशेषताएँ।
2. भारत में समाजशास्त्र की उत्तपत्ति के संबंध में आप क्या जानते हैं?
3. समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध स्थापित कीजिए।
4. औद्योगीकरण से समाज में आए बदलावों की चर्चा कीजिए।
5. उपनिवेशवाद के दौरान भारतीय दस्तकारों की दशा दयनीय क्यों थी?
6. समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है?
7. सरल समाज और जटिल समाज में अंतर स्पष्ट कीजिए।
8. "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
9. समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच अंतर।
10. कैसे राजनीतिक विज्ञान से समाजशास्त्र अलग है स्पष्ट करे?
11. समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के बीच अंतर।

6 अंको वाले प्रश्न

1. "समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञानों के मध्य सबका है। "इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. "भारतीय समाज जिसमें विभिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं" –इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. समाज के बहुलवादी परिप्रेक्ष्य की चर्चा कीजिए।

https://www.evidyarthi.in